ज्ञान विज्ञान गीत

बेटियों के पक्ष में

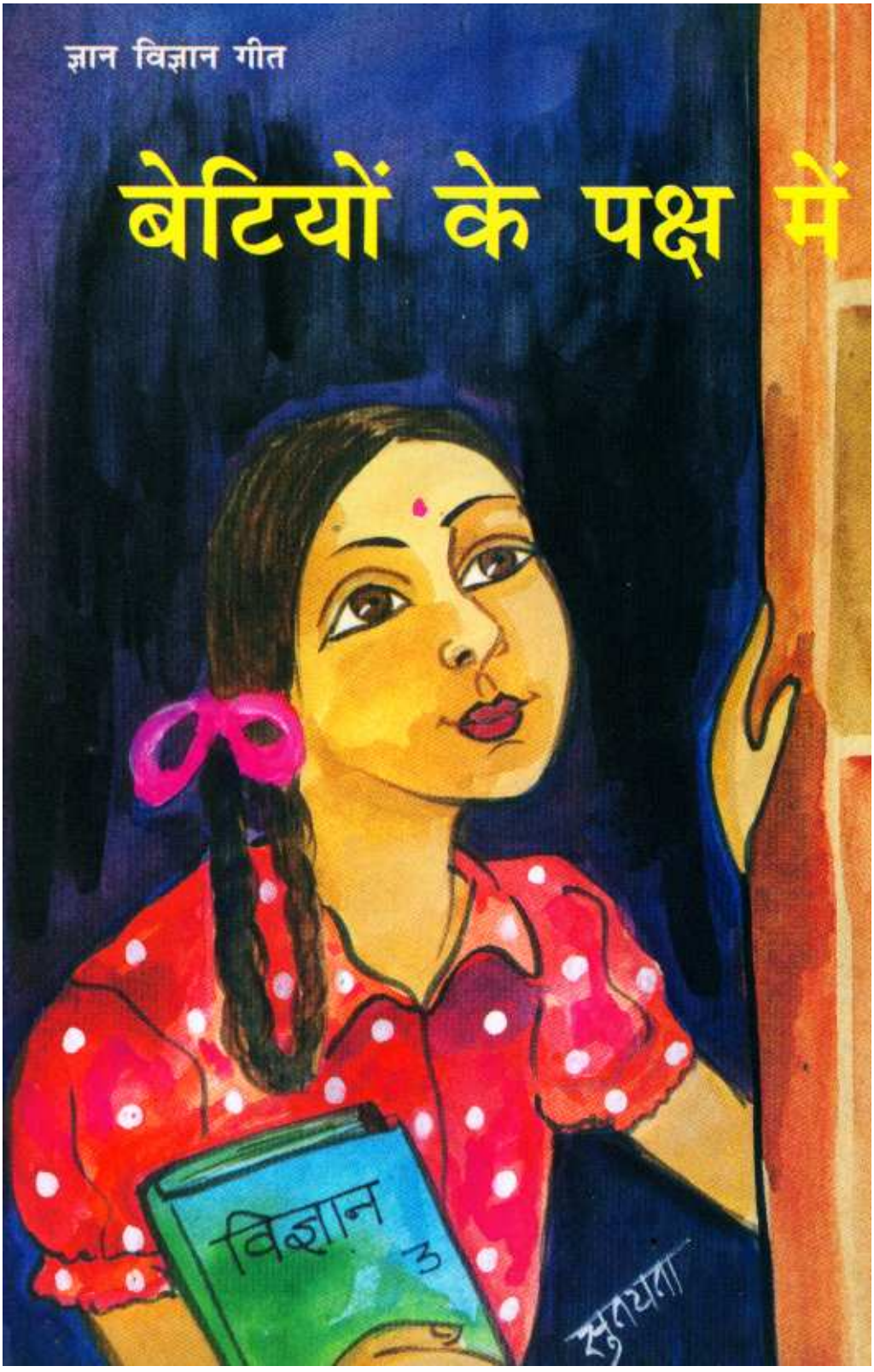

बेटियों के पक्ष में

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने
'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है।
इस आंदोलन का मकसद आम जनता में
पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

बेटियों के पक्ष में	***Betiyon Ke Paksh Mein***
पुस्तकमाला संपादक तापोश चक्रवर्ती	***Series Editor*** **Taposh Chakravorty**
कॉपी संपादक जगमोहन 'चोपता'	***Copy Editor*** **Jagmohan 'Chopta'**
रेखांकन सुनयना बी. पांडे	***Illustration*** **Sunayana B. Pande**
कवर एवं ग्राफिक्स जगमोहन	***Cover & Graphics*** **Jagmohan**
प्रथम संस्करण अक्टूबर, 2007	***First Edition*** **October, 2007**
सहयोग राशि 15 रुपये	***Contribuation*** **Rs. 15**
मुद्रण सन शाइन ऑफसेट नई दिल्ली - 110 018	***Printing*** **Sun Shine Offset** **New Delhi - 110 018**

Publication and Distribution

© Bharat Gyan Vigyan Samiti

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110 017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
website: www. bgvs.org

BGVS OCTOBER 2007 2K 1500 NJVA 0079/2007

बेटियों के पक्ष में

1. इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें 4
2. यह मशालों को जलाने का समय है 5
3. किताब ने कहा 6
4. पढ़ना बहुत जरूरी है 7
5. इंकलाब लिख दें 8
6. मजदूर का पत्र 9
7. एक दीपक 10
8. बेटियों के पक्ष में 11
9. ये क्या हो गया है हमारे शहर को 12
10. अहिंसा का पुजारी है 13
11. मुखौटों को तार-तार करेंगे 14
12. आग बुझाने की बात कर 15
13. सहमी-सी पायल की रुनझुन 16
14. मौसम 17
15. आओ लेकर बढ़ें कारवां 19
16. लड़ना है अब हमें 20
17. फाग 21
17. हर जबान पर नारें होंगे 22
19. अग्नि यह लपलपाती 23
20. सपनों के वारिस 24

इसलिए

इसलिए राह संघर्ष की हम चुनें,
जिंदगी आंसुओं में नहाई न हो।
शाम सहमी ना हो, रात हो ना डरी,
भोर की आंख फिर डबडबाई न हो। इसलिए...

सूर्य पर बादलों का न पहरा रहे,
रोशनी रोशनाई में डूबी न हो।
यूं न ईमान फुटपाथ पर हो खड़ा,
हर समय आत्मा सबकी ऊबी न हो।
आसमां में टंगी हों न खुशहालियां,
कैद महलों में सबकी कमाई न हो। इसलिए...

कोई अपनी खुशी के लिए गैर की,
रोटियां छीन ले हम नहीं चाहते।
छोड़कर थोड़ा चारा कोई उम्र की,
हर खुशी बीन ले हम नहीं चाहते।
हो किसी के लिए मलमली बिस्तरा,
और किसी के लिए इक चटाई नहीं हो। इसलिए...

अब तमन्नाएं फिर ना करें खुदकुशी,
ख्वाब पर खौफ की चौकसी ना रहे।
श्रम के पांवों में हों ना पड़ी बेड़ियां,
शक्ति की पीठ अब ज्यादती ना सहे।
दम न तोड़े कहीं भूख से बचपना,
रोटियों के लिए फिर लड़ाई न हो। इसलिए...

जिस्म से अब न लपटें उठें आग की,
फिर कहीं भी न कोई सुहागन जले।
न्याय पैसे के बदले न बिकता रहे,
कातिलों का मनोबल न फूले-फले।
कत्ल सपने न होते रहें इस तरह,
अर्थियों में दुल्हन की विदाई न हो। इसलिए... ■

यह मशालों को जलाने का समय है

अंधेरा बलवान होता जा रहा है,
यह मशालों को जलाने का समय है।
भेड़ियों की फौज हमलावर हुई है,
अब तो दीपक राग-गाने का समय है।

कर्म का फल छीन लेते हैं वे हम से,
और देते पूर्व जन्मों की दुहाई।
दुख का कारण गलत बतलाते हैं ज्ञानी,
कर रहे हैं रहजनों की रहनुमाई।

शत्रु के छल-छद्म उसकी साजिशों को,
खुद समझने और बताने का समय है।
बंट रहे हैं हम धर्म भाषा जातियों में,
इसलिए कमजोर होते जा रहे हैं।

हम स्वयं से लड़ रहे हैं और लुटेरे,
दिन ब दिन मुंहजोर होते जा रहे हैं।
यह नहीं है वक्त आंखें मूंदने का,
जुल्म से नजरें मिलाने का समय है।

चुप रहे तो होंठ सिल देंगे हमारे,
और कितनी पीढ़ियां गूंगी रहेंगी।
छीन लेंगे कौर मुंह का वे हमारे,
फिर गुलामी की नई बेड़ी पड़ेगी।

समय है हथियार चमकाने का अब तो,
युद्ध की भेरी बजाने का समय है। ■

किताब ने कहा

बिना दृष्टिवालों को देती नजर हूं,
पढ़ो तुम मुझे ज्योति का मैं सफर हूं।
हूं मैं ज्ञान-विज्ञान का इक खजाना,
साथ मेरे है बनता सफर सुहाना।
कठिन मुश्किलों का समाधान हूं मैं,
कभी हूं कहानी कभी हूं तराना।
अकेले न तुम पास में मैं अगर हूं, पढ़ो तुम मुझे...

है मेरा ये संसार सबसे निराला,
जो मन में बसालो तो फैले उजाला।
कभी मुझसे तुम दिल लगाकर तो देखो,
संवर जाएगा तेरा कल आने वाला।
अनूठे सृजन के सिखाती हुनर हूं, पढ़ो तुम मुझे...

युगों की कहानी हूं इतिहास हूं मैं,
किरण ज्ञान की दिल का जज्बात हूं मैं।
नई चाह जगती नई राह जुड़ती,
मैं जीने की इच्छा हूं विश्वास हूं मैं।
मैं भटके हुओं को दिखाती डगर हूं, पढ़ो तुम मुझे...

मैं घर बैठे दुनिया दिखा दूंगी तुमको,
सलीके से जीना सिखा दूंगी तुमको।
खड़े सामने प्रश्न के व्यूह जो हैं,
चुनौती से लड़ना सिखा दूंगी तुमको।
मैं अन्याय से अनवरत इक समर हूं, पढ़ो तुम मुझे... ■

पढ़ना बहुत जरूरी है

जीवन में कुछ करना है, तो पढ़ना बहुत जरूरी है,
सचमुच आगे बढ़ना है, तो पढ़ना बहुत जरूरी है।
बिना पढ़े मां-बाप को कैसे, सुख-दुख बतलाओगी,
बिना पढ़े सखियों को कैसे पाती भिजवाओगी।
करने काम चला जाएगा, दूर देश जब साजन,
बिना पढ़े उसको तुम कैसे चिट्ठी लिख पाओगी।
अमन-चैन से रहना है तो, पढ़ना बहुत जरूरी है। जीवन में...
पढ़-लिखकर इतिहास-चक्र को आगे ले जाना है,
पढ़-लिखकर हक के बारे में सबको बतलाना है।
पढ़-लिखकर ही हो सकती है पूरी हर अभिलाषा,
बच्चों को नित-नए ज्ञान से परिचित करवाना है।
सचमुच इन्सां बनना है तो, पढ़ना बहुत जरूरी है। जीवन में...
पढ़ने से इस बंद हृदय की, कलियां खिल जाती हैं,
पढ़-लिख लेने से इन्सां को, मंजिल मिल जाती है।
पढ़े-लिखे लोगों से हरदम, डरते हैं अन्यायी,
ज्ञान-शक्ति होने से जुल्म की, चूलें हिल जाती हैं।
हक की खातिर लड़ना है तो, पढ़ना बहुत जरुरी है। जीवन में...
बहुत सह लिया जुल्म-सितम अब, सहने से इनकार करो,
जिनके सुख-दुख एक से हैं, उनकी सेना तैयार करो।
पीछे हटना ठीक नहीं अब, बढ़कर तुम भी वार करो,
तेरा हक है जिन चीजों पर,
उन पर तुम अधिकार करो।
मक्कारों से भिड़ना है तो,
पढ़ना बहुत जरूरी है। जीवन में... ■

इंकलाब लिख दें

हर जुल्म की कहानी अब बेनकाब लिख दें,
आओ लहू से अपने हम इंकलाब लिख दें।
खेतों में खूं-पसीना हमने सदा बहाया,
क्यों बाग जिंदगी का सरसब्ज हो न पाया।
मेहनत की कमाई क्यों शैतान छीन लेते,
जीवन की हर खुशी क्यों धनवान बीन लेते?
सच जिसमें बोलता हो वैसी किताब लिख दें, आओ...
मासूम होटलों में क्यों प्लेट धो रहे हैं,
माएं हैं भूखी-प्यासी नवजात रो रहे हैं।
बहुओं की बेटियों की क्यों जल रहीं चिताएं,
क्यों गर्भ से ही उनको है मिल रही सजाएं?
होठों पे जिंदगी के हंसता गुलाब लिख दें, आओ...
क्यों हाथ मल रही है बेबस-सी जिंदगानी,
विषपान करके अक्सर क्यों मिट रही जवानी।
सीने में एक आंधी हर वक्त चल रही है,
सपनों की क्यों चिताएं बेवक्त जल रही हैं?
युग-युग के सवालों के वाजिब जवाब लिख दें, आओ...
तकदीर-भाग्य के सब सिद्धांत खोखले हैं,
ये जाति-धर्म-मजहब कुर्सी के चोंचले हैं।
सबको है एक जैसी ही भूख-प्यास लगती है,
हर दिल में धार की लौ है एक-सी मचलती।
कल की सुबह को आओ, हम कामयाब लिख दें, आओ...
हर ओर घुमड़ती है विध्वंस की घटाएं,
हम मुश्किलों से बचकर जाएं तो कहां जाएं?
अब रास्ता यही है मिल-जुल के हल निकालें,
भय छोड़कर सितम की आंखों में आंख डालें।
इस रात के मुकाबिल इक आफताब लिख दें, आओ... ■

मजदूर का पत्र

तन से तो हूं दूर बहुत, पर पास तुम्हारे मन है।
तेरी कसम तुम्हारे बिन, लगती हर घड़ी चुभन है।
दिल का दर्द बहुत गहरा है, इसमें काफी दम है,
किंतु पेट की व्यथा प्रिय, सोचो क्या इससे कम है?
जी करता उड़कर आ जाऊं, लेकिन बंधे पखन हैं।
कभी-कभी सपनों में सुनता नन्हें-मुन्ने की किलकारी,
उड़ जाती है नींद अचानक छा जाती मुझ पर लाचारी;
याद बहुत आता तब मुझको, अपना घर-आंगन है।
तुझ-सी नरम चांदनी छूकर अमृत भर देती है,
तेरे तन की खुशबू मन को पागल कर देती है;
सिर पर तपती धूप और, इन आंखों में सावन है।
समझ नहीं पाता हूं कब तक,
घुट-घुटकर यूं जीना होगा,
कब तक ठोकर खानी होगी,
कब तक आंसू पीना होगा;
जोड़-घटाने से सब दिन के,
ऊब गया जीवन है। ■

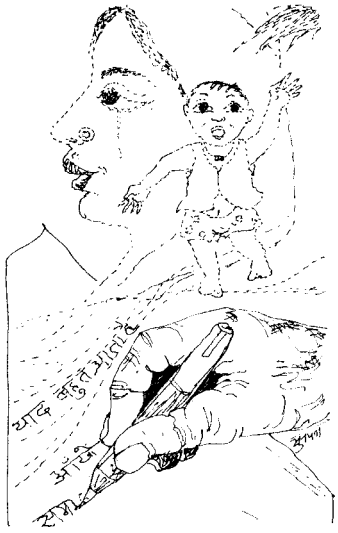

एक दीपक

हमने माना बड़ी मुश्किलें हैं,
गम का बादल बहुत है घनेरा।
एक दीपक अगर जल उठे तो,
कांप जाता है सारा अंधेरा।।
एक तितली-सी उड़ने का मन है, मुक्त वन में विचरने का मन है।
फूल की पंखुड़ी से निकलकर, गंध बनकर बिखरने का मन है।।
मस्त सागर की चंचल लहर-सी, चाहती हूं लगाऊं मैं फेरा।
एक दीपक...
यह घुटन यह तड़प छोड़ करके, बंद दीवार को तोड़ करके।
कामनाओं के अंकुर उगेंगे, वर्जना की शिला फोड़ करके।।
जंगलों पर्वतों घाटियों में, हम बनाएंगे अपना बसेरा।
एक दीपक...
प्यार देने का, पाने का मन है, रूठने का, मनाने का मन है।
दिलके साजों पे जो बज रहा है गीत, वह खुलके गाने का मन है।।
क्या दिया है जमाने ने हमको, क्या करेगा ये जग तेरा-मेरा।
एक दीपक...
ये जमाने की मनहूस शर्तें, हमको मंजूर हर्गिज नहीं है।
चल पड़े गर तो मंजिल हमारी पास है, दूर हर्गिज नहीं है।।
रात के गर्भ से ही हमेशा, है निकलता सुनहरा सवेरा।
एक दीपक... ■

बेटियों के पक्ष में

मोम जैसी पिघलती बहन-बेटियां।
नित नई शक्ल ढलती बहन-बेटियां।
जिंदगी की मधुर हसरतों से भरी,
हैं चिताओं में जलती बहन-बेटियां।

फूल जइसन बदन से लपटिया उठे,
आगे ई कहिया पे आखिर बुताई कि ना।
रोज हुंकार एकर बढ़ल जात बा,
ई दहेजवा का दानव माई कि ना।

देव-दानव सबै एक जइसन ले,
राम-रावण क पहचान मुश्किल भइल,
रोज घर-घर में सीता क होता दहन,
कहियो सचहूं में रावण फुंकाई कि ना।

द्रोपदी आज के के कन्हइया कहे,
हर तरफ जब दुशासन नजर आवता।
कृष्ण कुर्सी के माया में बाटें फसल,
लाज अबला के केहू बाई कि ना।

बाग में फूल झड़ दुर्दशा देख के,
हर काली आजु भयभीय लागति हवे,
कइसे बगिया बदली विषैली हवा,
प्यार से हर कली मुस्कराई कि ना।

मर्द के जन्म दे के जियावे ला जे,
ओकरे भइले प सोहर गवाई कि ना।
सीता सावित्री विद्योत्तमा हइ कभी,
लक्ष्मीबाई कभी इंदिरा कल्पना।

घर में बेटी जनम लेत होई खुशी,
ऊ घड़ी जिंदगी में आई कि ना। ■

ये क्या हो गया है हमारे शहर को

सोलो-

मंदिर में कभी मस्जिद में कभी भगवान को बांटा करते हैं,
कुछ शैतानों की चालें हैं इंसान को बांटा करते हैं।
ये समय-चक्र को फिर पीछे लौटाने की बातें करते हैं,
जंगल युग की बर्बर गाथा दुहराने की बातें करते हैं।
मजहब के ठेकेदारों से कह दो कि ना वे हैवान बनें।
भगवान के पहरेदारों से कह दो कि पहले वे इंसान बनें।

कोरस-

जलाते हैं अपने पड़ोसी के घर को,
ये क्या हो गया है हमारे शहर को।
समंदर का पानी भी कम ही पड़ेगा,
जो धुलने चलें रक्तरंजित नगर को।
मछलियों को कितनी गलतफहमियां हैं,
समझने लगी दोस्त खूनी मगर को।
संभालों जरा सरफिरे नाविकों को,
ये हैं मान बैठे किनारा भंवर को।
परिंदों के दिल में मची खलबली है,
मिटाने लगे लोग क्यों हर शहर को।
समंदर के तूफां से वो क्या डरेंगे,
चले ढूंढने हैं जो लालो-गुहर को।
उठो और बढ़ो क्योंकि हमको यकीं है,
हमारे कदम जीत लेंगे सफर को। ■

अहिंसा का पुजारी है

सोलो-

समझना उसको मुश्किल है बड़ा शातिर शिकारी है,
वो खंजर बेचने वाला अहिंसा का पुजारी है।
नए हथियार हैं उसके, नई रणनीतियां भी हैं,
नई सज-धज में निकला फिर पुराना कारोबारी है।

कोरस-

रफ्ता-रफ्ता हरेक शै निगलता जाता है,
नशे के झोंक में सबकुछ कुचलता जाता है।
एक खूंखार इरादा है शराफत में छिपा,
वो गिरगिटों की तरह रंग बदलता जाता है।
उसकी मक्कारियां हर रोज बढ़ती जाती है,
सितम की सारी हदें पार करता जाता है।
सबको तहजीब सिखाने की बात करता था,
उसके चेहरे से मुखौटा उतरता जाता है।
सुना है नींद उड़ गई है उसकी आंखों से,
डराने वाला आज खुद ही डरता जाता है।
नर्म फूलों से कट गई हैं सख्त चट्टानें,
दिलों के ताप से पत्थर पिघलता जाता है। ■

मुखौटों को तार-तार करेंगे

सोलो-

कलम को तोड़ देने से इबारत रुक नहीं सकती,
सितम से जुल्म से तो दिल की चाहत रुक नहीं सकती।
मशालें जल रही हैं और भी जलने को आतुर हैं,
ये तूफां रुक नहीं सकता, बगावत रुक नहीं सकती।

कोरस-

हम तेरे मुखौटों को तार-तार करेंगे,
और ये गुनाह यूं ही बार-बार करेंगे।
हममें हजारों पाश हजारों हैं हाशमी,
(हमने कलम के साथ उठाली हैं मशालें)
इस जंग को हम और धारदार करेंगे।
शब्दों को सूलियों पे चढ़ा पाया है कोई,
आवाज को वे कैसे गिरफ्तार करेंगे।
फांसी पे चढ़ा दो या गोलियों से उड़ा दो,
हर जुल्म का विरोध कलमकार करेंगे।
साहित्य फकत ढाल नहीं आक्रमण भी है,
यह आक्रमण हम तुम पे लगातार करेंगे। ■

आग बुझाने की बात कर

सोलो-

जरूरी है कि मिलकर खून की बौछार को रोकें,
कि इस पागल हवा की तेज होती धार को रोकें।
महंतों और मुल्लाओं से सारा देश आजिज है,
नकाबें इनकी उलटें, इनके कारोबार को रोकें।

कोरस-

राहों में न अंगार बिछाने की बात कर,
गर हो सके तो आग बुझाने की बात कर।
तू भी न सो सकेगा अपने घर में चैन से,
घर तू न पड़ोसी का जलाने की बात कर।
मांओं की गोद दुल्हनों की मांग मत उजाड़,
उजड़े हुए दिलों को बसाने की बात कर।
तू कर रहा वो जुल्म तेरी मां-बहन पे हो,
यह सोच जरा फिर सितम ढाने की बात कर।
आंसू किसी भी आंख में अच्छे नहीं लगते,
रोती हुई आंखों को हंसाने की बात कर।
लड़ना है तो मंहगाई से लड़ भुखमरी से लड़,
इस हिटलरी सत्ता को मिटाने की बात कर। ■

सहमी-सी पायल की रुनझुन

सोलो-

कहीं तलाक कहीं अग्नि परीक्षाएं हैं,
आज भी इन्द्र हैं गौतम हैं अहिल्याएं हैं।
प्यार की राह में दुष्यंत जिन्हें छोड़ गए,
भटकती फिर रहीं दर-दर शकुंतलाएं हैं।

कोरस-

सहमी-सी पायल की रुनझुन सिमट गई तनहाई तक,
पहुंच न पाते कितने सपने डोली तक शहनाई तक।
मन से लेकर आंखों तक अनकही व्यथा अंकित होगी,
कैसे-कैसे दिन देखे हैं बचपन से तरुनाई तक।
अंबर से पाताललोक तक चुभती हुई निगाहें हैं,
अक्सर जरा-जरा-सी बातें ले जातीं रुसवाई तक।
हृदय-सिंधु की एक लहर का भी स्पर्श न कर पाए,
जिनका दावा जा सकते हैं सागर की गहराई तक।
शहर गांव घर भीतर-बाहर सब हैं उनके घेरे में,
पहुंच चुके हैं सांपों के फन देहरी तक अंगनाई तक।
सीता कभी अहिल्या बनती कभी द्रोपदी रूपकुंवर,
जुड़ी हुई है कड़ी-कड़ी सब फूलन भंवरी बाई तक।
अगर नहीं प्रतिरोध किया तो एक दिन सब लुट जाएगा,
पहले की मीठी बातें फिर आ पहुंचा बरियाई तक।
तारीखों पर तारीखें फिर तारीखों पर तारीखें,
बंटा हुआ है सारा जीवन हर अगली सुनवाई तक। ■

मौसम

सोलो-

दरिंदे आते हैं अक्सर दरिंदे आएंगे
नदी पहाड़ ये जंगल उजड़ते जाएंगे।
कटे पेड़ों से लिपटकर कहा परिंदों ने,
तुम्हारे बाद कहां हम पनाह पाएंगे?

कोरस-

कभी खिलखिलाकर हंसाता है मौसम,
कभी प्यार से रूठ जाता है मौसम।
परिंदों तितलियों से देकर संदेशे
हमें पास अपने बुलाता है मौसम।

जवानी में रखती है कलियां कदम जब,
अजब गंध से महकाता है मौसम।
झमाझम बरसती घटाओं के नीचे,
मधुर गीत सरगम सुनाता है मौसम।

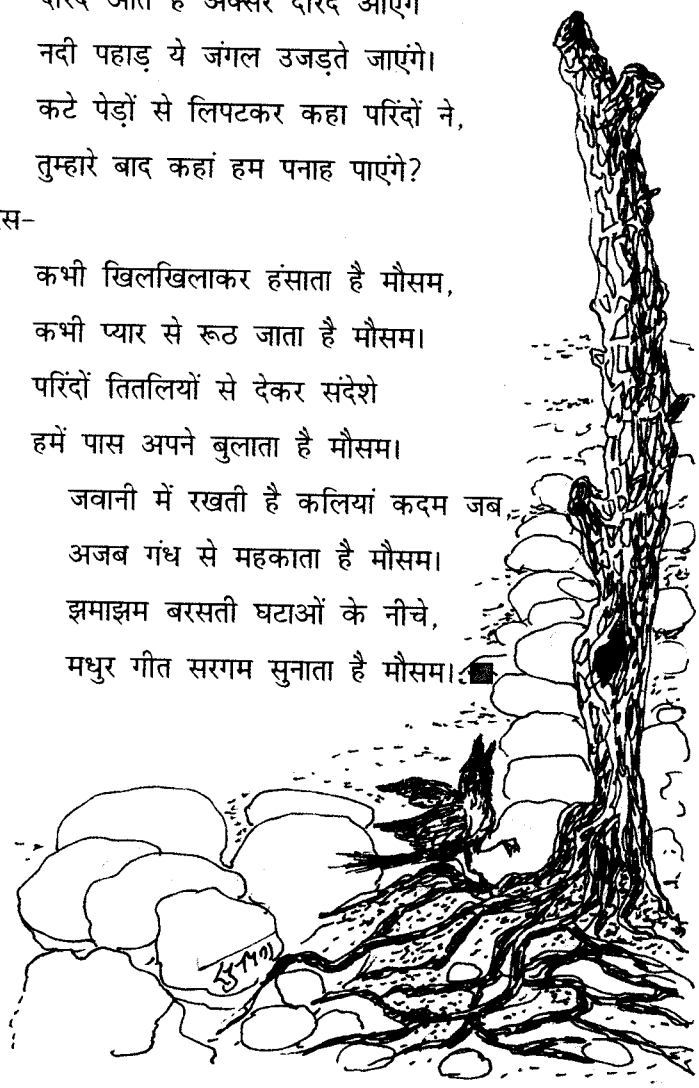

नदी झील सागर पहाड़ों वनों में,
कई रूप अपने दिखाता है मौसम।
हमारे लगातार जुल्मों-सितम से,
सिसकता है आंसू बहाता है मौसम।

जरा एक बार दिल लगाकर तो देखो,
जनम-भर ये रिश्ता निभाता है मौसम।
बड़ा मस्तमौला बड़ा बावरा है,
अदाओं से पागल बनाता है मौसम।

कभी पास बैठो सुनो उसकी बातें,
अकेले में क्या फुसफुसाता है मौसम।
भटक हम गए पत्थरों के वनों में,
हमें याद अक्सर दिलाता है मौसम।

हमारी निठुरता भरी बेरुखी से,
बहुत देर तक छटपटाता है मौसम।
कोई दर्द का साज बजता है हर सूं,
सुनो जब कभी गुनगुनाता है मौसम।

हमारे बिना तुम भी जी ना सकोगे,
ये एहसास हमको कराता है मौसम। ■

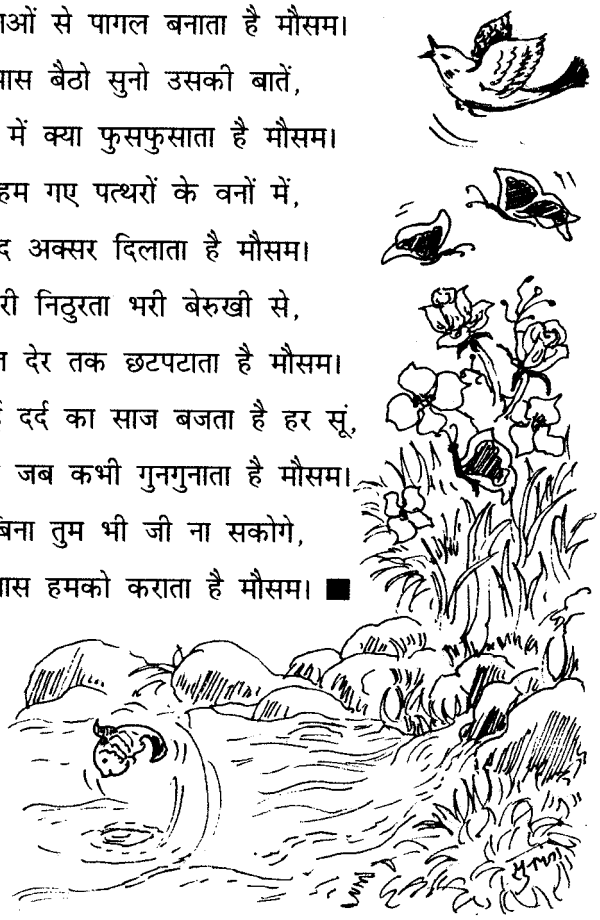

आओ लेकर बढ़ें कारवां

आओ ऐसा रचें इक जहां दोस्तों,
जैसे हंसता हुआ गुलसितां दोस्तों।

दूर जीवन से सबके सदा हो अमां,
हर समय ज्योति हो, हर समय पूर्णिमा।
गुनगुनी धूप हो नेह की चांदनी,
हर हृदय में जले प्यार की इक शमां।
चांद-तारों भरा आसमां दोस्तो, आओ ऐसा रचें...

हाथ जब भी बढ़े प्यार के वास्ते,
याकि दुष्टों के संहार के वास्ते।
हम लड़ेंगे सदा जिंदगी का सफर,
एक प्यारे से मिनसार के वास्ते।
है बदलनी यह समा दोस्तों, आओ ऐसा रचें...

बेवजह कोई हमको लड़ाए नहीं,
एक को नीचे दूजा बताए नहीं।
हर समय हो जहां बस सृजन-ही-सृजन,
कोई विध्वंस के गीत गाए नहीं।
आओ लेकर बढ़ें कारवां दोस्तों, आओ ऐसा रचें... ■

लड़ना है अब हमें

यह जिंदगी का दौर बदलना है अब हमें,
जीने के लिए मौत से लड़ना है अब हमें।
दुष्टों ने स्नेह-शील के आदर्श जो दिए,
बेटी-बहन मां के सारे भाव धो दिए।
नफरत खौफ के दिलों में बीज बो दिए,
नारी को आंसुओं में, लहू में डुबो दिए।
झांसी की रानी बनके निकलना है अब हमें,
यह जिंदगी...

बन मोम की गुड़िया हमें रहना नहीं कुबूल,
नाजुक छुई-मुई-सी सहमना नहीं कुबूल।
बनकर के फूल अब हमें लुटना नहीं कुबूल,
यह जोर-जुल्म अब हमें सहना नहीं कुबूल।
इन रावणों के शीश कुचलना है अब हमें,
यह जिंदगी...

अपमान का हर दाग मिटाएंगे हम स्वयं,
युग-युग का अंधकार भगाएंगे हम स्वयं।
तन-मन की लगी आग बुझाएंगे हम स्वयं,
जल्लाद हैं जो उनको जलाएंगे हम स्वयं।
हाथों में खुद मशाल ले बढ़ना है अब हमें,
यह जिंदगी... ■

फाग

मुखड़े से घुंघटा हटाओ सखी,
पिंजरे से बाहर आओ सखी।
पढ़ना जरूरी है लिखना जरूरी,
दुनिया को मनमाफिक गढ़ना जरूरी।
खुद जागो सबको जगाओ सखी, पिंजरे से...
युग-युग के सड़े-गले बंधन को तोड़ो,
नए ज्ञान-विज्ञान से रिश्ता जोड़ो।
जरा आगे कदम बढ़ाओ सखी, पिंजरे से...
नारी ने इतिहास नूतन रचा है,
धरती-गगन कुछ न उससे बचा है।
अब तुम भी पर फैलाओ सखी, पिंजरे से...
ममता की मूरत हो सीता भी तुम हो।
ललकारती रण में गीता भी तुम हो,
लव-कुश को लड़ना सिखाओ सखी, पिंजरे से...
आंचल में दूध और आंखों में पानी।
बदलेंगे हम यह पुरानी कहानी,
रणचंडी रूप दिखाओ सखी, पिंजरे से...

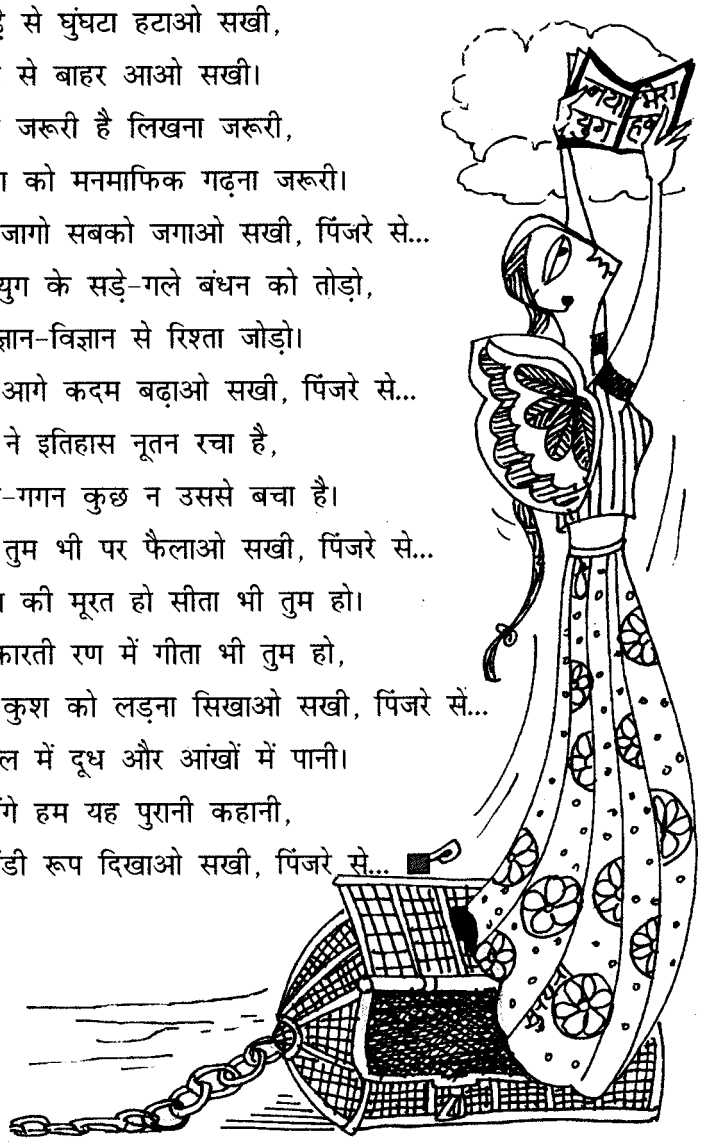

हर जबान पर नारे होंगे

मौसम अगर गरम होगा तो होठों पर अंगारे होंगे,
हाथों में होगी मशाल और हर जबान पर नारे होंगे।
बच्चों की तोतली जुबां, दुधमुही हंसी है बजारों में ,
सारी दुनिया बंटती जाती है कुछ खूनी मक्कारों में।
मां की ममता, प्यार की दुनिया के भी वारे-न्यारे होंगे। मौसम...
पर्वत झील नदी जंगल सब पर हैं उनकी लगी निगाहें,
आदमखोर अजगरों की दिन-दिन बढ़ती ही जाती चाहें।
अपनी झोपड़ियों से अब बेदखल सभी बंजारे होंगे। मौसम...
उनके झांसे में आए तो अपने हाथों कट जाओगे,
खुद को नहीं पहचान सकोगे यूं टुकड़ों में बंट जाओगे।
हम न बचेंगे, मंदिर-मस्जिद, चर्च और गुरुद्वारे होंगे। मौसम...
दुनिया के उन्मुक्त हाट में बिकती जिनकी बोटी-बोटी,
करते कर्म-कुकर्म साथी पर मिलती नहीं जिन्हें दो रोटी।
चिंगारी फैलाएं उनमें दूर तभी अंधियारे होंगे। मौसम...
जिनके जले झोंपड़े जिनके हक पर हमला चौतरफा है,
इच्छाओं के हर अंकुर पर होती ओलों की वर्षा है।
जिनको छला गया है अब तक, वे अब साथ हमारे होंगे। मौसम...
कुछ जलते सवाल हैं जिनके उत्तर आओ मिलकर ढूंढें,
देश के हर बच्चे-बूढे से घर-घर हम चलकर यह पूछें।
कब तक जेलों में गांधी और संसद में हत्यारे होंगे? मौसम... ■

अग्नि यह लपलपाती

अग्नि यह लपलपाती किधर से चली,
कामनाएं कुंवारी हवन हो गईं।
हर नगर हर शहर हर गली-गांव में,
उड़ रहे थे मगन धूप-छांव में।
पर तभी कट गए कल्पना के,
बेड़ियां पड़ गई स्वप्न के पांव में।
क्यों कंटीली हुई जिंदगी की डगर,
उम्र की हर घड़ी क्यों चुभन हो गई।
पर्व-त्यौहार का मुंह रुवांसा है क्यों,
उठ रहा आसमां में धुआ-सा है क्यों?
क्यों खुशी की घड़ी थी लगे मातमी,
फिर रही हर तरफ इक निराशा है क्यों?
बेबसी क्यों अधर की बनी सहचरी,
क्यों हंसी आजकल बदचलन हो गई।
पांव में तो महावर लगा था अभी,
चार दिन पूर्व ही हाथ पीले हुए।
अश्रु क्यों आज उनसे छलकने लगे,
नैन जो फार से थे रसीले हुए।
लाज मनमें संजोए सुनहले सपने,
अग्नि को क्यों समर्पित दुल्हन हो गई। ■

सपनों के वारिस

अपनी मोहक किलकारी से, गगन गुजाते तुम,
इस रोते जीवन को हो, संपूर्ण बनाते तुम।
कभी-कभी सपनों में जब थोड़ा मुस्काते हो,
या नीदों में हंसते हो, आनंद लुटाते हो।
प्यासे मन पर अतुलनीय, अमृत बरसाते तुम।
तुम आए तो यह धरती खुशियों से किलक उठी,
तुम आए तो सारी अभिलाषाएं चहक उठीं,
अच्छा लगता जब घर की, चीजें बिखराते तुम
मम्मी से सारी बातें गुपचुप कर लेते हो,
दिनभर की सारी थकान पलमें हर लेते हो,
बहुत मजा आता जब छिपते या शरमाते तुम।
इस दुनिया में बुरे बहुत पर अच्छे भी तो हैं,
झूठों-मक्कारों में कितने सच्चे भी तो हैं,
अपने भोलेपन से मन के
कलुष मिटाते तुम।
बेटे तुम हो मेरे सारे सपनों के वारिस,
तुम से ही अब जुड़ी हुई है,
मेरी हर ख्वाहिश,
मेरी आंखों के सपनों
जैसे अंखुवाते तुम। ■